परपंचे सहु पंथ चाले, कहे लेसूं चरण निवास।
ए रामतना जे जीव पोते, ते केम पामे साख्यात।। १९ ।।

सभी धर्म ढोंग के सहारे चल रहे हैं। यह कहते हैं हम परमात्मा के चरण प्राप्त करेंगे। जो जीव इस झूठे संसार के (खेल के) हैं, वह साक्षात् को कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

कोई भैरव कोई अगिन, कोई करवत ले।
पारब्रह्मने पामे नहीं, जो तिल तिल कापे देह।। २० ।।

कोई भैरव झांप खाकर (पहाड़ों से गिरकर) प्राण देते हैं। कोई अग्नि में जलते हैं। कोई काशी के लगे हुए कुएं में आरे से कटते हैं (काशी करवट को भारत सरकार ने बन्द कर दिया है)। इस तरह से तन के टुकड़े-टुकड़े करने पर भी परब्रह्म की प्राप्ति नहीं होती।

अनेक स्वांग रमे जुजवा, असत ने अप्रमाण।
मूल विना जे पिंड पोते, ते केम पामे निरवाण।। २१ ।।

इस तरह संसार में सभी अलग-अलग झूठे और बिना प्रमाण के ढोंग रचकर बैठे हैं। जिनका अपना तन ही सपने का है (जो मिटने वाला है), वह सत्य को कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। १२७ ।।

वैराटनी जाली

अनेक किव इहां उपजे, वैराट मुख वखाण।
वचन कही मांहें थाय मोटा, पण पामे नहीं निरवाण।। १ ।।

इस संसार में बहुत से ग्रंथों की रचना करने वाले हुए जो अपने मुख से वाणी कहकर बड़े कहलाए, परन्तु मोक्ष का रास्ता उन्हें नहीं मिला।

बोले सहु बेसुधमां, कोई वचन काढे विसाल।
उतपन सर्वे मोहनी, ते थई जाय पंपाल।। २ ।।

बेसुधि में कोई-कोई पार के वचन कह भी देते हैं, परन्तु यह सब मोह तत्व से उत्पन्न होने के कारण झूठे हो जाते हैं।

वैराट कहे मारो फेर अवलो, मूल छे आकास।
डालों पसरी पातालमां, एम कहे वेद प्रकास।। ३ ।।

क्षर पुरुष (चौदह लोक) का वैराट उलटा है। इसकी जड़ें आसमान में तथा डालियां नीचे पाताल की ओर फैली हैं। ऐसा वेदों का ज्ञान कहता है।

दोडे सहु कोई फलने, ऊंचा चढे आसमान।
आकास फल मले नहीं, कोई विचारे नहीं ए वाण।। ४ ।।

संसार के सभी ज्ञानी फल लेने के लिए आसमान में चढ़ते हैं, परन्तु आसमान में फल नहीं मिलते। इन वचनों का विचार नहीं करते।

Nijanand App

फल डाल अगोचर, आडी अंतराय पाताल।
वैराट वेद बंने कोहेडा, गूंथी ते रामत जाल।। ५ ।।

संसार रूपी वृक्ष के फल और डाल दोनों ही दिखाई नहीं पड़ते। क्योंकि इनके बीच में पाताल का अन्तर आ जाता है। विराट और वेद दोनों ही धुन्ध (कोहरा) हैं। इन्होंने ही संसार के अन्दर अपना माया जाल बिछा रखा है।

विध बंने दीसे जुगते, नाभ ने वली मुख।
गूंथी जालों बंने जुगते, माणी लीधां दुख सुख।। ६ ।।

दोनों की एक जैसी हकीकत दिखाई देती है। संसार नाभि से पैदा हुआ है और वेद मुख से उत्पन्न हुए हैं। दोनों ने बड़ी युक्ति से जाल गूंथ रखा है। इसी में दुःख सुख मान लिया है।

बंने कोहेडा बे भांतना, वैराट ने वली वेद।
ए जीव जालों जाली बांध्या, जाणे नहीं कोई भेद।। ७ ।।

विराट और वेद दोनों ही दो तरह की धुन्ध हैं। इन दोनों ने ही जीव को जाल में बांध रखा है। इसका भेद कोई नहीं जानता।

कडी न लाधे केहेने, ए जालोनी जिनस।
त्रगुणने लाधे नहीं, तो सूं करे मूढ मनिस।। ८ ।।

यह जाल इस तरह का है कि इसके खोलने की कड़ी किसी को नहीं मिली। ब्रह्मा, विष्णु, महेश को नहीं मिली तो संसार के मूढ़ मनुष्यों को कैसे मिले?

देखाडवा तमने, कोहेडा कीधा एह।
उखेली फेर नाखूं अवलो, जेम छल न चाले तेह।। ९ ।।

तुम्हें खेल दिखाने के लिए यह धुन्ध वाला संसार बनाया है। इसको पहले उखाड़ कर फेंक दूं जिससे छल की चाल न चल सके।

तांण अवला अतांग पूरा, आमलो अवलो एह।
आतम ने खोटी करे, साची ते देखे देह।। १० ।।

इसका बहाव उलटा और गहरा है। भंवर उलटी हैं। यह आत्मा को झूठा समझते हैं और देह को सच्चा समझते हैं।

करे सगाई देहसों, नहीं आतम नी ओलखांण।
सनमंध पाले देहसों, ए मोहजल अवलो तांण।। ११ ।।

आत्मा की पहचान नहीं और शरीर से नाते जोड़ते हैं। यह भवसागर का उलटा बहाव है। यह शरीर की रिश्तेदारी पालते हैं।

मरदन अंगे चंदन चरचे, प्रीते प्रीसे पाक।
सेज्या समारी सेवा करे, जाणे मूल सनमंध साख्यात।। १२ ।।

शरीर की मालिश करते हैं, चन्दन लगाते हैं और बड़े प्रेम से भोजन परोसते हैं। सेज सजाकर सेवा करते हैं और इसी तन को साक्षात् मूल का रिश्तेदार जानते हैं।

Nijanand App

आतम टले ज्यारे अंगथी, त्यारे अंग हाथे बाले।
सेवा करतां जे वालपणे, ते सनमंध ऐवो पाले।। १३ ।।

जब जीव शरीर से निकल जाता है तो उसी तन को हाथ से जलाते हैं। जिसकी लोग प्यार से सेवा करते थे उस तन के साथ ऐसा बर्ताव करते हैं।

हाथ पग मुख नेत्र नासिका, सहु अंग तेहना तेह।
तेणे घर सहु अभडावियूं, सेवा ते करतां जेह।। १४ ।।

हाथ, पैर, मुख, नासिका, नेत्र—सब अंग वही होते हैं, परन्तु वही तन जिसकी सेवा करते थे, अब मुर्दा होने पर छूत लगा देते हैं।

अंग सर्वे वाला लागे, विछोडो खिण न खमाय।
चेतन चाल्या पछी ते अंग, उठ उठ खावा धाय।। १५ ।।

मरने से पहले सभी अंग प्यारे लगते थे। जिनका बिछुड़ना एक क्षण के लिए भी सहन नहीं होता था। जीव निकल जाने के बाद वही अंग डरावना हो जाता है। लगता है, भूत हो गया और खा जाएगा।

सगे मेल्यूं ज्यारे सगपण, त्यारे अंगसूं उपनू वेर।
ततखिण तेणे झोकी बाली, वेहेंची लीधूं घेर।। १६ ।।

ऐसे सगे सम्बन्धियों ने जब सम्बन्ध छोड़ दिया तो उस तन से दुश्मनी हो गई और तुरन्त ही उसको अग्नि में जला दिया। उसके बाद घर-जायदाद को बांट लिया।

जीव जीवोना सनमंध मेली, करे सगाई आकार।
वैराट कोहेडा एणी विधे, अवला ते कई प्रकार।। १७ ।।

इस तरह जीव जीवों का नाता छोड़कर तन से सम्बन्ध करते हैं। विराट इस तरह की धुन्ध है। यह उलटा तो कई प्रकार से है।

एम अवलो अनेक भांते, वैराट नेत्रों अंध।
चेतन विना कहे छोत लागे, वली तेसूं करे सनमंध।। १८ ।।

यह कई तरह से उलटा है। आंखों से अन्धा है। चेतन जीव के बिना तन को छूत लगती है, फिर उसी तन से रिश्ता करते हैं।

एक बेखज विप्रनो, बीजो बेख चंडाल।
छवे छेडे छोत लागे, संग वोले तत्काल।। १९ ।।

एक जीव ब्राह्मण के भेष में होता है और दूसरा चाण्डाल के भेष में। चाण्डाल के कपड़े छू जाने से छूत लग जाती है और कपड़ों को धोना पड़ता है।

बेख अंतज रुदे निरमल, रमें मांहें भगवान।
देखाडे नहीं केहेने, मुख प्रकासे नहीं नाम।। २० ।।

नीच चाण्डाल का हृदय निर्मल है और उनके हृदय में भगवान रहते हैं, किन्तु वह किसी को दिखता नहीं। भगवान के नाम का शोर भी वह नहीं मचाता है।

Nijanand App

अंतराय नहीं एक खिणनी, सनेह साचे रंग।
अहनिस द्रष्ट आतमनी, नहीं देहसूं संग।। २१ ।।

भगवान से एक पल अलग नहीं होता। ऐसे सच्चे प्रेम में बंध के रहता है। रात-दिन आत्म दृष्टि से देखता है। उसका तन से कोई मतलब नहीं रहता।

विप्र बेख बेहेर द्रष्टि, खट करम पाले वेद।
स्याम खिण सुपने नहीं, जाणे नहीं ब्रह्म भेद।। २२ ।।

ब्राह्मण का भेष बाहरी (शारीरिक) दृष्टि से वेद के छः कर्मों का पालन करता है (पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना और दान लेना)। परमात्मा उसे स्वप्न में भी ध्यान नहीं आते। उसे परमात्मा के भेद का ज्ञान भी नहीं होता है।

उदर कुटम कारणे, उत्तमाई देखाडे अंग।
व्याकरण वाद विवादना, अर्थ करे कई रंग।। २३ ।।

परिवार के पेट भरने के लिए अंगों की सफाई दिखाते हैं। व्याकरण के वाद-विवाद में तरह-तरह के अर्थ निकालते हैं।

हवे कहो केने छवे छेडे, अंग लागे छोत।
अधमतम विप्र अंगे, चंडाल अंग उद्योत।। २४ ।।

अब बताओ, किसके कपड़ा छूने से अंग को छूत लगती है। ब्राह्मण का अंग नीच है और चाण्डाल के अंग में उजाला है।

ओलखाण सहुने अंगनी, आतमनी नहीं द्रष्ट।
वैराटनो फेर अवलो, एणी विधे सहु सृष्ट।। २५ ।।

सभी को तन की पहचान है। आत्मा की पहचान नहीं है। विराट का चक्कर इस तरह से उलटा है और सारी सृष्टि इसी तरह की है।

ए जुओ अचरज अदभुत, चाल चाले संसार।
ए प्रगट दीसे अवलो, जो जुओ करी विचार।। २६ ।।

इस गजब की हैरानी को देखो। सारा संसार इस चाल में चल रहा है। विचार कर देखो तो सारा उलटा दिखेगा।

सत ने असत कहे, असत ने सत करी जाणे।
ते विध कहीस हूं तमने, अवलो एह एधाणे।। २७ ।।

यह सच को झूठ और झूठ को सच्चा जानते हैं। अर्थात् जीव को झूठ समझते हैं जो सच्चा है और तन को सच्चा समझते हैं जो झूठा है। उसकी मैं हकीकत कहती हूं कि यह इस तरह से उलटा है।

आकारने निराकार कहे, निराकारने आकार।
आप फरे सहु देखे फरता, असतने ए निरधार।। २८ ।।

जिसका तन है, (आत्मा) उसको निराकार कहते हैं। जो शरीर (मिटने वाला है) है उसको आकार (साकार) कहते हैं। आप स्वयं इस चक्कर में पड़े हैं और सबको इसी तरह फिरता देखते हैं। इस तरह से सारा विराट झूठा है।

Nijanand App

मूल विना वैराट ऊभो, एम कहे सहु संसार।
तो भरमना जे पिंड पोते, ते केम कहिए आकार।। २९ ।।

यह विराट (ब्रह्माण्ड) बिना जड़ के खड़ा है, ऐसा सारी दुनियां के लोग कहते हैं। जो स्वयं ही भ्रम का तन हो, उसे आकार क्यों कहा जाए?

आकार न कहिए तेहेने, जेहेनो ते थाय भंग।
काल ते निराकार पोते, आकार सच्चिदानंद।। ३० ।।

जो मिटने वाला है उसे आकार नहीं कहना चाहिए। समय के अनुसार महाप्रलय में ब्रह्माण्ड का नाश हो जाता है। इसलिए वह निराकार है। सच्चिदानन्द पूर्ण-ब्रह्म जो अखण्ड है उसको आकार (साकार) कहना चाहिए।

मृगजल द्रष्टें न राचिए, जेहेनूं ते नाम परपंच।
ए छल छे माया तणो, रच्यो ते अवलो संच।। ३१ ।।

यह सारा संसार मृग जल (मृग तृष्णा) के समान है। इसमें मगन नहीं होना चाहिए। इसका तो नाम ही झूठा (सपना) है। यह सब माया का जाल है, जिसने सच को भी उल्टा कर रखा है।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। १५८ ।।

वेदनी जाली

वेद मोटो कोहेडो, जेहेनी गूंथी ते झीणी जाल।
कांईक संखेपे कही करी, दऊं ते आंकडी टाल।। १ ।।

वेद का ज्ञान सबसे बड़ी धुन्ध (कोहरा) है, जिसने बड़ी बारीकी से जाल गूंथा है। श्रीजी कहते हैं कि इसका थोड़ा सा वर्णन करके उलझन ही मिटा देता हूं।

वैराट आकार सुपननो, ब्रह्मा ते तेहेनी बुध।
मन नारद फरे मांहें, वेदे बांध्या बंध वेसुध।। २ ।।

विराट का आकार (रूप) सपने का है। ब्रह्मा इसकी बुद्धि है और नारद मन हैं। यह चारों ओर घूमता है। इस तरह से वेदों ने बन्धन बांधकर सबको बेहोश कर रखा है, अर्थात् स्पष्ट ज्ञान नहीं दिया है।

लगाड्या सहु रब्दे, व्याकरण वाद अंधकार।
एणी बुधे सहु वेसुध कीधां, विवेक टाल्या विचार।। ३ ।।

वेदों ने सबको झगड़े में डाल दिया है। पण्डित जन व्याकरण के वाद-विवाद में अंधेरे में भटकते हैं। इस तरह की बुद्धि ने सबको बेसुध कर रखा है। सोचने की शक्ति (Thinking Power) विवेक को वेदों ने समाप्त कर दिया है।

बंध बांध्या वेदव्यासे, वस्त मात्रना नाम बार।
ते वाणी वखाणी व्याकरणनी, छलवा आ संसार।। ४ ।।

वेदव्यास ने एक "अखर" (अक्षर) के ऊपर बारह मात्राएं लगाकर, उसके बारह रूप बनाकर बन्ध बांधे हैं और संसार को ठगने के लिए व्याकरण की वाणी का बखान किया है।

Nijanand App